दिनांक 21.03.2017

प्रति,

सम्पादक
दैनिक

शब्द ही ब्रह्म है

सांची विश्वविद्यालय में तत्त्वबिंदु कार्यशाला का आयोजन

भारतीय दर्शन की महान विभूति वाचस्पति मिश्र द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत "तत्त्वबिंदु" पर आधारित पांच दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ सांची बौद्ध भारतीय-ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में किया गया। 21 से 25 मार्च तक आयोजित कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में बोलते हुए अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के उप कुलपति रहे प्रोफेसर कपिल कपूर ने कहा कि भारतीय भाषा दर्शन में **शब्द ही ब्रह्म है** और यही **शब्द भारतीय भाषा दर्शन का बीज है**। उन्होंने भारतीय भाषा दर्शन और पाश्चात्य भाषा दर्शन की तुलना कर बताया कि भारतीय भाषा दर्शन के लिए ग्रंथों का अध्ययन आवश्यक है, लेकिन ग्रंथों के अध्ययन के लिए आस्था ज़रूरी है। प्रो. कपिल कपूर ने कहा कि **भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान का आधार व्यक्ति की चेतना** है और इसके केंद्र में भाषा ही है।

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलाधिपति प्रो. कपिल कपूर ने बताया कि वाचस्पति मिश्र द्वारा लिखित तत्त्वबोधिनि के ब्रह्मकांड के विचार पाश्चात्य दर्शन से मिलते जुलते हैं। उन्होंने कहा कि शब्द, ध्वनि भी है, शक्ति भी है, भाषा भी है, स्वरूप भी है और शब्द, शब्द भी है। शब्द का अपना बोध और चिंतन है। उनका कहना था कि **शब्द एक दीपक की तरह है, जिसका अपना रूप और आकृति है**।

प्रो. कपूर ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान, कर्म और भक्ति का महत्व है। उन्होंने बताया कि आदि शंकराचार्य ने **ज्ञान और कर्म के जोड़ को भक्ति के बराबर** बताया है। पांच दिन चलने वाली इस तत्त्वबिंदु कार्यशाला में सम्मिलित होने पहुंचे राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के पूर्व कुलपति प्रो. वी कुटुंब शास्त्री ने बताया कि वाचस्पति मिश्र को सभी शास्त्रों का ज्ञाता कहा जाता था। उन्होंने 9**वीं शताब्दी में** मींमासा की टिप्पणी के रूप में तत्त्वबोधिनि लिखा था और इसमें **शब्द बोध की पांच अलग-अलग पारंपरिक व्याख्या** की थी। **वाचस्पति मिश्र ने वैदिक विचार एवं परंपरा की छह अलग-अलग टिप्पणियां भी लिखीं थीं।** जिसके कारण उन्हें सभी शास्त्रों का विशेषज्ञ कहा जाता था।

सांची विश्वविद्यालय के बारला अकादमिक परिसर में आयोजित इस कार्यशाला में वाचस्पति मिश्र द्वारा उल्लेखित स्फोट सिद्धांत, वाक्यस्फोट, वाक्यार्थ, वर्णमाला सिद्धांत, अन्त्यवर्ण सिद्धांत पर गहन चर्चा की जाएगी। स्फोट सिद्धांत पर नॉर्थ बंगाल विश्वविद्यालय के प्रो. रघुनाथ घोष ने व्याख्यान दिया। वर्णमाला सिद्धांत पर प्रो. सुनंदा शास्त्री, अन्त्यवर्ण सिद्धांत पर प्रो. वी कुटुंब शास्त्री,

अन्विताविधानवाद सिद्धांत पर पुणे विवि के प्रो. देवनाथ त्रिपाठी तथा अभिहितान्वयवाद सिद्धांत पर पुणे विवि के ही प्रो. वीएन झा कार्यशाला को संबोधित करेंगे। भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद की ओर से प्रायोजित इस कार्यशाला में बड़ी संख्या में देशभर के विश्वविद्यालयों से भाषा विज्ञान एवं संस्कृत के शोधार्थियों ने पंजीयन कराया है।

- सांची विवि में वाचस्पति मिश्र के कार्य पर कार्यशाला
- वाचस्पति मिश्र द्वारा लिखित मीमांसा की टिप्पणी है **तत्त्वबिंदु**
- 21-25 मार्च तक पांच दिवसीय कार्यशाला
- ज्ञान का आधार व्यक्ति की चेतना है-प्रो कपिल कपूर
- भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित

आपसे निवेदन है कि इस कवरेज को अपने सम्मानित प्रकाशन में जगह देने का कष्ट करें।